हँसते हुए

सब सिखाते हैं मुझे
दोस्त और दुश्मन
अपने और पराए
खेत और खलिहान
धरती और आकाश

सब सिखाते हैं मुझे
मुझे इनसे मिलते है रंग
जीवन और मरण के
मिलने और बिछड़ने के
इतने सारे शिक्षक और मैं तिनका भर
पढ़ रही हूँ किताबों संग सबको
समझ रही हूँ किताबों के रूप
प्रकृति की रची पुस्तकें
उतनी ही जरूरी लगीं
जितनी स्कूल की किताबें...

रात

स्याह काली रात
चाँदनी सी उजली रात
कभी धूसर तो कभी मटमैली रात
अपने बाहें के झूले में मुझे बिठा लेती है

मुझे रात कभी अकेले नहीं मिली
जब भी मिली
कुछ सपनों के मोती पिरो गयी आँखों में....

दिन

कैसे - कैसे दिन
सुख के दिन
दुख के दिन
आशा और निराशा से भरे दिन

कैसे -कैसे दिन
मिलने का दिन
विदा होने का दिन
पहला दिन
आखिरी दिन

इतने सारे दिन
मैं देखती हूँ एकटक
दिन की यात्रा को
दिन है कि ठहरता ही नहीं।

कविता

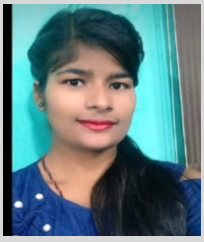

बबीता कुमारी

भरोसा

हमें है भरोसा,
अपने काबिलियत पर।
अपने मंजिल को पाने की।।
माता - पिता को है भरोसा,
अपने संतानों पर।
अपने दिए गए संस्कारों की।।
माली को है भरोसा,
अपने कर्मों पर।
बगिया में फूल खिलने की।।
हमें रखनी है,
इसी भरोसे पे भरोसा।
एक दिन अपने जीवन को
सफल बनाने की।।